Pdfformats.com

** श्री लक्ष्मी जी की आरती **

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।

तुमको निस दिन सेवत, हर विष्णु विधाता॥ ॐ जय...॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।

सूर्य-चंद्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ॐ जय...॥

दुर्गा रूप निरंजनी, सुख सम्पत्ति दाता।

जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता॥ ॐ जय...॥

तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभदाता।

कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता॥ ॐ जय...॥

जिस घर में तुम रहतीं, तहाँ सब गुण आता।

सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता॥ ॐ जय...॥

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता।

खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥ ॐ जय...॥

शुभ-गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।

रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥ ॐ जय...॥

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता।

उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ ॐ जय...॥

आरती लक्ष्मी माता की, जो कोई नर गाता।

उर आनंद समाता, पाप उतर जाता॥ ॐ जय...॥

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।

तुमको निस दिन सेवत, हर विष्णु विधाता॥ ॐ जय...॥